कमलेश्वरजी की कहानियों में महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ

प्रो. किशोर नाथाभाई धोलकिया
ऍम.पी.शाह आर्ट्स एन्ड सायन्स कॉलेज, सुरेन्द्रनगर

भारत देश की आजादी के बाद देश में काफ़ी परिवर्तन हुआ हैं| परिवर्तन की लहेर कस्बे से ज्यादा महानगरों में ज्यादा दिखाई देती हैं | शहर में रहने वाला व्यक्ति एक मशीन के जैसा बन गया हैं| व्यक्ति के पास अपनों के लिए भी वक्त नही हैं,यहाँ तक की अपने बच्चों के लिए भी वक्त निकालना मुश्केल हैं | शहर की भीड़ - भाड में आज का व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व खो गया है| शहर की भारी भीड़ और शोरगुल में व्यक्ति इतना संवेदनहीन बन गया है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर भी शहर में रहनेवाला व्यक्ति उसके दुःख से दुःखी नहीं होता है और वह अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में वापिस मशगुल हों जाता हैं | ऐसे ही संवेदनहीन और महानगरीय सभ्यता और उसकी विसंगतियों के बारे में हम आज यहाँ पर कमलेश्वरजी की कहानियों के आधार पर बात करेंगे |

कमलेश्वरजी की कहानी " खोई हुई दिशाएँ " में महानगरीय अजनबीपन का अंकन हुआ हैं | कस्बे के लोग शहर की ताकजाक और शोरगुल से आकृष्ट होकर कमाने के लिए शहर में आते हैं | कस्बे के लोग कस्बे से अपनी सभ्यता और संस्कृति को लेकर आते हैं | शहर की सभ्यता और संस्कृति कस्बे की सभ्यता और संस्कृति से बिलकुल अलग है इसलिए कस्बे का व्यक्ति शहर में सेट नहीं हो पाता है, वह न पूरी तरह से शहर का बन पाता है और न ही वह कस्बे का रह पाता है| " खोई हुई दिशाएँ " में चन्दर की स्थिति ऐसी ही होती है |

चन्दर तीन साल पहले दिल्ही कमाने आता है किन्तु यह राजधानी में कुछ उसे अपना नहीं लगता है | सब अपने होते हुए भी सब बेगाने हैं | चन्दर को अपने अकेलेपन के कारण अपना क़स्बा याद आता है | शहर में लोग अपने व्यक्तित्व को खोकर जीवन जी ते है, किन्तु चन्दर कस्बे का है, उसमें संवेदना है, इसीलिए वह शहर का नहीं बन पाता है | व्यक्ति अपने भीतरी व्यक्तित्व को खो कर ही शहर का हों सकता है | महानगर के मित्र भी स्वार्थी और कृत्रिमता से भरे हैं | चन्दर की प्रेमिका इन्द्रा जो की कहीं दूसरे के साथ शादी कर के दिल्ही आती है, चन्दर वहाँ जाता है और अपनी पहचान देता है किन्तु वहाँ पर भी उसे निराशा मिलती है और अंत में वह अपनी पत्नी निर्मला को पूछता है कि " तुम मुझे पहचानती हों ? बाहर के अकेलेपन से व्यक्ति घर पर भी पत्नी से यदि अपनत्व नहीं मिलता तो आदमी टूट जाता है | इस प्रकार चन्दर अपनी खोई हुई दिशा में भटकता रहता है| वह अपनी दिशा छोड़कर दूसरी दिशा में अपनत्व ढूढता है और उसे निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता है | इस प्रकार कस्बे के एक व्यक्ति की संवेदनशीलता की चटपटाहट को बखूबी प्रस्तुत किया है |

कस्बे में रहनेवाला व्यक्ति महानगर की ताकजाक को देखकर नोकरी करने के लिए अपना क़स्बा छोड़कर महानगर में आता है और वह अपने अकेलेपन के कारण आनेवाली परिस्थिति से जुजता है | कमलेश्वरजी की कहानी " पराया शहर " में ऐसा ही वर्णन देखने को मिलता है | इस कहानी में सुखवीर नाम का एक युवक अपने कस्बे को छोड़कर महानगर दिल्ही में नोकरी करने के लिए आता है और उसे नोकरी करते - करते पन्द्रह साल हो गए है किन्तु आज भी यह महानगर उसे पराया लगता है, अपना नहीं | सुखवीर अपने पिता के स्वभाव के कारण महानगर आता है, किन्तु वह एक कस्बे का है इसीलिए उसमें संवेदना अब भी जिन्दा है फिर भी वह अपने पिता को लिखता है कि, " बापू ! तुम अकेले हो, तुम्हारा मन न लगता हो तो तुम यही आकर रहो | " सुखवीर महानगर का नहीं हों पाता है क्योंकि अब भी सुखवीर में संवेदना बाकी है ,स्नेह बाकी है| यदि उन्हें पूर्णरूप से शहर का होना है तो उन्हें यह संवेदना और स्नेह को त्यागना पड़ेगा | तभी वह शहर का हो पाएगा | इसीलिए उन्हें दिल्ही अपना नहीं परन्तु पराया शहर लगता है |

कमलेश्वरजी ने दूसरी एक कहानी लिखी है " अजनबी " जिस में उन्होंने महानगर में व्यक्ति की पहचान नहीं होती है या फिर उसे कोई पहचान ता नहीं है इसका वर्णन अजनबी व्यक्ति के द्वारा व्यक्त किया है | महानगर अजनबीपन का केन्द्र है | वहाँ पर कोई किसी को नहीं जानता है और जानता भी है तो अनजान बनकर व्यवहार करता है | अजनबी अपने दोस्त की तलाश में महानगर बम्बई आता है | उसका दोस्त एक आर्किटेक्ट का सहायक है उसने कई ईमारते बनाई है| अजनबी अपने इस दोस्त का पता ठिकाना सब कुछ जानते हुए भी महानगर में भटकता रहता है | वह उन सब जगह पर जाता है जहाँ पर उनके दोस्त ने ईमारत बनवाई थी | यहाँ तक की उनके यहाँ मजदूरी करनेवाले मजदूर के पास भी जाता है, किन्तु वह लोग भी उन्हें पहचानते नहीं हैं | अजनबी कस्बे का है इसीलिए उन्हें यह बात बहुत ही आश्चर्यजनक लगती हैं | अजनबी को दोस्त का नाम पता मालुम होते हुए भी वह उन्हें खोंज नहीं पाता हैं | महानगरों में केवल बिल्डिंग है आदमी की पहचान नहीं है| आज के युग में व्यक्ति अपनी पहचान खो कर ईट - पत्थरों के समान बेजान बन गया है | इस की अभिव्यक्ति इस कहानी में हुई है |

कमलेश्वरजी ने महानगरों में रहनेवाले व्यक्ति की संवेदना को मृत:प्रायः होते हुए दिखाया है, और महानगरों में जो मौत होती है उसमें जानेवाले लोगो में भी कृत्रिमता और संवेदनहीनता को दिखाया है, साथ में जो शोकसभाएँ होती हैं, उसमें भी बनावटी देखाव ही होते है इसका भी वर्णन अपनी कहानियों में किया है | कमलेश्वरजी ने " दिल्ही में एक मौत " नामक कहानी में महानगरीय सभ्यता की कृत्रिमता, यान्त्रिकता और संवेदनहीनता का वर्णन किया है | दिल्ही के मशहूर उद्योगपति शेठ दीवानचंद की मृत्यु हो जाती हैं | उनकी शवयात्रा निकलती है | शेठ के परिचित लोग शवयात्रा में सामिल होने के लिए जाने से पूर्व तैयारी कर रहे हैं | कोई कपड़ो को आयरन कर रहा है तो कोई बूट पॉलिश कर रहा है तो कोई अच्छे कपडे पहन रहा है तो कोई नेलपॉलिश कर के अच्छे कपडे पहन रहा हैं | सब लोग शवयात्रा में जा रहे है किन्तु साजसज्जा किसी विवाह में जाने की कर रहे हैं | शवयात्रा में जाना केवल बहाना है सब को लगे कि परिचित

लोग आए है किन्तु मूलकारण तो अपने - अपने स्वार्थ का है | महानगरों के लोग मौत जैसी गंभीर जगह पर भी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में करनेवाले व्यवहार करते हैं | शेठ की शवयात्रा में जाने के बाद सब लोग अपने - अपने काम पर सीधे चले जाते हैं | कथावाचक यह सब देख रहा है, वह कस्बे का है इसीलिए उसे काफ़ी दुःख होता है | सचमुच महानगर में रहनेवाले लोगो के सम्बन्ध केवल दिखावे के होते है, और उसमें भी यह लोग स्वार्थी होते है, अपने स्वार्थ तक ही साथ देते है स्वार्थपूर्ण होने पर पहचानते भी नहीं है | इस प्रकार कमलेश्वरजी ने इस कहानी में संवेदनहीनता का वर्णन किया है |

कमलेश्वरजी ने " शोक समारोह " नामक कहानी में भी संवेदना की बात की है | इस कहानी में बन्ना साहब मिनिस्ट्री में काम करते थे | जो धीरे - धीरे करके मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी बन गए थे | एक दिन अचानक उनकी मृत्यु हों जाती हैं | उनके घरवाले उनके लिए शोकसभा का आयोजन करते हैं | बन्ना साहब का मित्र इस शोकसभा में आता है | किन्तु बन्ना साहब के घर की रोनक देखकर वह दंग रह जाते हैं | वह सोचता है कि, यह शोकसभा है या फिर विवाह के लिए समारंभ हैं | बन्ना साहब की पत्नी और बच्चे सब शोक में होने के बजाए खुश थे | घर में आनेवाले मेहमानों के लिए भोजन का प्रबन्ध किया हुआ था | सब लोग शोक के बजाए बड़ी चाऊ से खाना खा रहे थे | यह देख कर बन्ना साहब का मित्र दंग रह जाता है | वह सोचता है कि, यह लोग मृत्यु को भी दिखावा समझते है कैसे लोग है ? आज के युग में लोग तड़क - भडक एवं दिखावे में ही मानते हैं | उनके लिए आज मृत्यु भी एक दिखावा मात्र बन गया है | यह दिखावा विशेषकर महानगरों में ज्यादा देखने को मिलता है |

कमलेश्वरजी ने अपनी कहानी " आधुनिक दिन और आधुनिक राते " नामक कहानी में शोक सभाओं के नाम पर होनेवाले सम्मेलनों एवं पार्टियों पर व्यंग्य किया है | इसमें माजिद मरहूम नामक लेखक की शोकसभा का आयोजन प्रकाशक गिरिधारीलाल करता है , जिसमें सामेल होने के लिए अनेक नामी व्यक्ति आए थे | वह सबको जब एक - एक करके बोलने को कहा गया तो वह सब केवल अपनी क्षमता पर ही भाषण देते थे | मरहूम व्यक्ति का जिक्र तक नहीं करते थे | और साथ - साथ में चाय - पार्टी का भी आयोजन किया जाता है और सब लोग हसी - खुशी चाय - पार्टी में अपनी खुशी जाहर करते थे | सब लोग शोकसभा में आये है यह तक भूल जाते हैं | इस से कहा जा सकता है कि महानगरों में लोगो की मृत्यु होने पर भी लोग दुःख नहीं अनुभूत करते हैं | वह लोग संवेदनहीन बन गए हैं | इसका वर्णन कमलेश्वरजी ने इस कहानी में किया है|

कमलेश्वरजी ने अपनी एक और कहानी " चार महानगरों का तापमान " में पत्नी के पति के अलावा किसी दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध के बारे में बताया हैं | इसमें लेखक ने मानवीय मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों के साथ पारिवारिक मूल्यों का भी हास होते दिखाया है | महानगरों में रहनेवाले लोग इतने आधुनिक हाई कि, आधुनिक नारी वैवाहित होते हुए भी अपने पति के अलावा किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध रखती है और उसमें उसे कोई पाप नहीं दीखता है | इस कहानी में एक नारी है जिसका पति आये दिन काम के सिलसिले में टूर पर रहता है और वह नारी अपने प्रेमी

के साथ अपने बेडरूम में शरीर सुख भोगती हैं, और जब दरवाजा खटकता है और दरवाजा खोला जाता है तो दरवाजे पर उस नारी का पालतू कुत्ता " जेकी " था | वह अन्य व्यक्ति को देखकर भोंकता है क्योंकि, वह व्यक्ति उसका मालिक नहीं है | वह जोर - जोर से भोंकता रहता है किन्तु, वह नारी जो अपने प्रेमी के साथ थी, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है और कुत्ता भोंकता रहता है और वह दोनों शरीर सुख भोगने में रत रहते हैं | बेजुबान प्राणी होकर भी वह अपनी मालकिन के अवैध सम्बन्ध पर अपनी नाराजगी दिखाता है| किन्तु उसका प्रभाव कुछ नहीं पड़ता है और वह दोनों अपनी धून में रत रहते हैं | इस प्रकार इस कहानी में लेखक ने महानगरीय सभ्यता की असलियत दिखाने के साथ पारिवारिक मूल्यों का हास भी दिखाया है|

" अच्छा ठीक है " कहानी में कमलेश्वरजी ने अर्थ के कारण बिगड़ते पति - पत्नी सम्बन्ध को महानगरीय संदर्भ में प्रस्तुत किया हैं | जीवन की सुख - सुविधाओं को भोगने के लिए असली पति और बेटे को छोड़कर सम्पन्न पुरुष के साथ विवाह करनेवाली पत्नी का वर्णन इस कहानी में हैं | पति कम्पनी में जॉब करता है और उसी कम्पनी में उसकी पत्नी सेक्रेटरी थी | पत्नी अपने सुख के लिए अपने बॉस से शादी कर लेती है | पति अपनी पत्नी और बालक से जुदा हो जाता हैं | पत्नी अपने बच्चे को जब बोर्डिंग स्कूल में भेजने जाती है तब बच्चा तुतलाते हुए कहता है कि, "तुम मुझे त्यों छोल के जा रही हों ? " तब वह उसे डांटकर कहती है कि, तुम्हे अब यही रहना है और वह बच्चा कहता है कि " अच्छा ठीक है " और कहानी पुरी हो जाती हैं | यहाँ पर लेखक कहते है कि महानगर में रहनेवाले माँ - बाप अपनी खुशी के लिए बच्चों की खुशी भी नहीं देखते हैं | इस प्रकार इस कहानी में पति - पत्नी के सम्बन्ध को टूटते हुए दिखाया गया है|